



Be Mains Ready

रामचरितमानस के 'राम-भरत-मलिप' प्रसंग की काव्यगत वशिष्टताओं का नरूपण कीजिये।

04 Jul 2019 | रवीज़न टेस्ट्स | हिंदी साहित्य

दृष्टिकोण / व्याख्या / उत्तर

रामचरितमानस हिंदी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है जिसमें तुलसी का प्रबंध कौशल अपने चरम रूप में दिखाता है। प्रबंध कौशल की सबसे बड़ी कसौटी है रसात्मक स्थलों की सही पहचान। रसात्मकता की दृष्टि से तुलसी की कविता 'रामचरितमानस' में संभवतः सबसे अधिक तन्मय राम-भरत मलिप के अवसर पर हुई है।

राम-भरत मलिप के प्रसंग में नाटकीयता तथा भावोन्मेष दोनों का सुंदर संगम हुआ है। इस प्रसंग में तुलसी चरम नाटकीयता की सृष्टिकरने में भी सफल रहे हैं। प्रारंभ में जब लक्ष्मण को सूचना मिलती है कि भरत चतुरंगिणी सेना सहित आ रहे हैं तो वे भरत पर क्रोधित होकर उसे मारने की शपथ ले लेते हैं। इन पंक्तियों में वीर रस का परिपाक हुआ है। लक्ष्मण आकाशवाणी तथा राम के समझाने के बाद ही शांत होते हैं राम की इस समझाइश में वरिधाभास अलंकार का प्रयोग दर्शनीय है-

“११११ ११११ १११ ११११ ११११११ १११ १ ११११११ १११११ ११११११”

राम-भरत मलिप होने पर राम यह बताने का अधिकार भरत को सौंप देते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए। भरत कोई नरिण्य कर पाएं इससे पहले ही राजा जनक भी वहीं आ जाते हैं। इसके बाद पाँच दिन तक अनरिण्य की स्थिति बनी रहती है जो प्रसंग के नाटकीय प्रभाव को बढ़ाती है। अंततः भरत नरिण्य का अधिकार पुनः श्री राम को देते हैं और राम के नरिण्य के समय नाटकीय तनाव चरम पर पहुँचता है।

नाटकीय तनाव से अधिक महत्त्व इस प्रसंग का पारिवारिक मूल्यों की स्थापना के लिये है। बड़े भाई और छोटे भाई के बीच कैसा विश्वास होना चाहिए यह राम और भरत के संबंध में दिखाता है। इसी प्रकार माता का आदर्श रूप कौशलया में दिखाता है। सीता के रूप में आदर्श बहू व पत्नी का चित्रण है। तुलसी ने रामचरितमानस के माध्यम से जिस आदर्श परिवार की परिकल्पना को सुस्थापित किया है उसका सघनतम रूप भरत मलिप के प्रसंग में ही दिखाता है।

इस पूरे प्रसंग में तुलसी की तन्मयता चरम पर है इसीलिये उन्होंने पूरे प्रसंग को ही भक्तियुक्त बना दिया है। भरत भक्ति में नमिग्न हैं। गुरु वशिष्ठ सहित सारा मुनिसमाज भक्ति रस में आकंट डूबा है और मथिला तथा अयोध्या के वासी भी भक्ति में डूबे हैं।

काव्यकला की दृष्टि से भी यह प्रसंग तुलसी के श्रेष्ठतर कार्यों में से एक है। अनुप्रास और रूपक के तो वे सम्राट हैं ही पर इस प्रसंग में उन्होंने वरिधाभास, अनन्वय तथा दृष्टान्त जैसे अलंकारों का भी सधा हुआ प्रयोग किया है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि तुलसी की कविता 'रामचरितमानस' में संभवतः सबसे अधिक तन्मय राम-भरत मलिप के अवसर पर ही हुई है।